

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, धर्मशास्त्र, सत्र 10, त्रिदेवों का समापन, ईश्वर के गुण, परिचय और अविभाज्य गुण

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र उचित या ईश्वर पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 10 है, त्रिएकत्व का समापन, ईश्वर के गुण, परिचय, और असंप्रेषणीय गुण।

हम त्रिएकत्व के सिद्धांत के समापन के साथ धर्मशास्त्र उचित का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

पिता, पुत्र और आत्मा एकता और समानता में विद्यमान हैं। यह हमारे सात सिद्धांतों में से सातवाँ है जो त्रिएकत्व के सिद्धांत का निर्माण करते हैं। एक ईश्वर है, पिता ईश्वर है, पुत्र ईश्वर है, पवित्र आत्मा ईश्वर है, व्यक्ति अविभाज्य हैं लेकिन अलग-अलग हैं, वे परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं, और अंत में, शास्त्र स्वयं हमें हाथ पकड़कर त्रिएकत्व के निष्कर्षों की ओर ले जाता है जब यह कहता है कि पिता, पुत्र और आत्मा एकता और समानता में विद्यमान हैं।

तीन त्रित्ववादी व्यक्तियों को एकता और समानता में जोड़ने वाले अंश हमारे निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं। तीन व्यक्तियों को एकता और समानता में जोड़ने वाले पाठ प्रचुर मात्रा में हैं, लेकिन हम सुसमाचारों से केवल नए नियम के पत्रों और रहस्योद्घाटन के तीन लेखकों का नमूना लेंगे। अपने महान आदेश में, यीशु अपने शिष्यों से कहता है कि वे सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाएँ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दें, मत्ती 28:19।

नाम शब्द एकवचन है, फिर भी तीनों व्यक्तियों के नाम एक ही हैं। इसके अलावा बपतिस्मा केवल ईश्वर के नाम पर किया जाता है, जो तीनों व्यक्तियों के ईश्वरत्व को दर्शाता है। तीनों एक ईश्वर के रूप में मौजूद हैं, लेकिन वे अलग-अलग हैं और उन्हें भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

पौलुस ने अपने आशीर्वाद में तीन व्यक्तियों को ईश्वरीय आशीर्वाद के स्रोत के रूप में चित्रित किया है: "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति तुम सब के साथ रहे" 2 कुरिन्थियों 13:12। केवल परमेश्वर ही अनुग्रह, प्रेम और संगति प्रदान करता है, और यही तीनों व्यक्ति करते हैं। यह 2 कुरिन्थियों 13:14 होना चाहिए था, न कि 12।

उद्धार केवल परमेश्वर का कार्य है। पौलुस पिता की दया, प्रेम और दया को उद्धार के स्रोत के रूप में प्रस्तुत करता है, आत्मा के पुनर्जन्म और नवीनीकरण को इसके अनुप्रयोग के रूप में, और मसीह को आत्मा के माध्यम के रूप में, तीतुस 3, 4 से 6। मुझे इसे पढ़ने की आवश्यकता है। लेकिन जब हमारे पिता परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की भलाई और दया प्रकट हुई, तो उसने हमें बचाया, हमारे द्वारा धार्मिकता में किए गए कार्यों के कारण नहीं, बल्कि उसकी अपनी दया के अनुसार, पवित्र आत्मा के पुनर्जन्म और नवीनीकरण के स्नान के द्वारा, जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर भरपूर मात्रा में उंडेला, ताकि हम उसके अनुग्रह से न्यायोचित ठहरकर अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।

तीतुस 3:4 से 6. ये व्यक्ति अलग-अलग हैं और एक दूसरे के लिए गलत नहीं हैं, और प्रत्येक उद्धार में भूमिका निभाता है। यूहन्ना सिखाता है कि पवित्र आत्मा को झूठी आत्माओं से कैसे अलग किया जाए। 1 यूहन्ना 4, 2. हर आत्मा जो यीशु मसीह को स्वीकार करती है कि वह शरीर में आया है, परमेश्वर की ओर से है।

1 यूहन्ना 4:2. प्रत्येक परमेश्वर से है। प्रत्येक अपना सत्य बताता है। पिता शिक्षकों को भेजता है जो उसके पुत्र के अवतार की गवाही देते हैं और पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होते हैं।

लेकिन हर आत्मा जो यीशु को स्वीकार नहीं करती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। पद 3. आत्माएँ और वे शिक्षक जिन्हें वे प्रेरित करते हैं, जो अवतार को अस्वीकार करते हैं, वे मसीह विरोधी हैं, न कि परमेश्वर पिता। झूठे शिक्षकों की चेतावनी के बाद, यहूदा अपने पाठकों को यहूदा 20 और 21 में सलाह देता है।

लेकिन हे प्रिय मित्रों, तुम अपने पवित्रतम विश्वास में अपने आपको बनाते हुए, पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए, अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो, और अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की बाट जोहते रहो। यहूदा 20 और 21. उन्हें पवित्रतम विश्वास, सुसमाचार की नींव पर कलीसिया का निर्माण करना चाहिए।

उन्हें आत्मा पर भरोसा करते हुए प्रार्थना करनी चाहिए। पिता द्वारा प्रेम करने और पुत्र द्वारा उनकी रक्षा करने के विषय पर लौटते हुए, पद 1 से, यहूदा अपने पाठकों से कहता है कि पिता की आज्ञा मानकर उसके प्रेम में बने रहें। उन्हें यीशु, मसीह से, उनकी वापसी पर दया और अनंत जीवन की आशा भी करनी चाहिए।

पवित्रशास्त्र, फिर से, तीन व्यक्तियों को अलग करता है, पिता के प्रेम, आत्मा में प्रार्थना और मसीह की वापसी की प्रत्याशा के बारे में बताता है। यूहन्ना, प्रकाशितवाक्य 1:4 में प्रार्थना करता है कि परमेश्वर “एशिया की सात कलीसियाओं” को अनुग्रह और शांति प्रदान करे, जिसके लिए वह प्रकाशितवाक्य 1:4 लिखता है। लेकिन परमेश्वर लिखने के बजाय, वह लिखता है “वह जो है, जो था, और जो आने वाला है।”

उसके सिंहासन के सामने सात आत्माएँ, और यीशु मसीह, क्रमशः पिता, आत्मा और पुत्र का उल्लेख करते हुए, श्लोक 4 और 5। यूहन्ना तीन व्यक्तियों को अलग करता है और उन्हें दिव्य आशीर्वाद देने के रूप में चित्रित करता है, जिससे उनकी दिव्य स्थिति का संकेत मिलता है। त्रिएकत्व के सिद्धांत के निष्कर्ष में, एक ईश्वर है जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में अनंत काल तक विद्यमान रहता है। व्यक्ति अविभाज्य हैं, लेकिन उन्हें अलग किया जाना चाहिए।

रहस्यमय ढंग से, वे एक दूसरे में हैं। वे एक दूसरे में रहते हैं, एक दिव्य सार के भीतर तीन व्यक्तियों के रूप में।

यह तथ्य कि तीनों व्यक्तियों को एकता और समानता में जोड़ने वाले ग्रंथ सुसमाचार, तीन अलग-अलग पत्र लेखकों और प्रकाशितवाक्य से आते हैं, हमें त्रिएकत्व के लिए नए नियम की गवाही की व्यापकता की याद दिलाता है। कई बार, पवित्रशास्त्र परमेश्वर की महानता की अभिव्यक्तियों को

अन्य विशेषताओं के साथ जोड़ता है। निम्नलिखित अंश क्रमशः उसकी संप्रभुता, विश्वासयोग्यता और शक्ति के लिए ऐसा करते हैं।

भजन 135: 5 और 6. क्योंकि मैं जानता हूँ कि यहोवा महान है। हमारा प्रभु सभी देवताओं से बड़ा है। यहोवा स्वर्ग में और पृथ्वी पर, समुद्रों और सभी गहराइयों में जो चाहता है, करता है।

नहेम्याह 1:5. हे प्रभु, स्वर्ग के परमेश्वर, महान और भययोग्य परमेश्वर, जो अपने प्रेम रखनेवालों और आज्ञाओं को माननेवालों के साथ अपनी वाचा रखता है। नहेम्याह 1-5.

यिर्मयाह 10: 6 और 7. हे प्रभु, आपके जैसा कोई नहीं है। आप महान हैं। आपका नाम शक्ति में महान है।

हे राष्ट्रों के राजा, कौन तुझसे नहीं डरेगा? यह वही है जिसके आप हकदार हैं। क्योंकि राष्ट्रों के सभी बुद्धिमान लोगों और उनके सभी राज्यों में, तेरे जैसा कोई नहीं है। यिर्मयाह 10:6 और 7. भजन संहिता परमेश्वर के नाम और उसके व्यक्तित्व की महानता के लिए उसकी स्तुति करती है, 8:1, 148:13.

वे उसके महान कार्यों के लिए भी उसकी प्रशंसा करते हैं। भजन संहिता 145:3-6। प्रभु महान है और उसकी बहुत प्रशंसा की जाती है।

उसकी महानता अथाह है। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को तेरे कामों की घोषणा करेगी और तेरे पराक्रमी कामों का बखान करेगी। मैं तेरे वैभव और महिमामय ऐश्वर्य और तेरे अद्भुत कामों का बखान करूंगा।

वे तेरे विस्मयकारी कामों की शक्ति का बखान करेंगे, और मैं तेरी महानता का बखान करूंगा। भजन संहिता 145:3-6। परमेश्वर की महानता हमें उसकी और केवल उसकी आराधना करने के लिए प्रेरित करती है।

भजन 86:8-10. 96:3-5. लूका 1:46-48.

यह हमें उसका भय मानने के लिए प्रेरित करता है। भजन 96:3-5. यिर्मयाह 10:6-7.

उसके प्रभुतापूर्ण हाथ के अधीन हो जाओ। भजन 135:5-6। और उसकी वाचा की वफादारी पर भरोसा रखो।

नहेम्याह 1:5. परमेश्वर की महानता हमें दूसरों के सामने उसकी गवाही देने के लिए भी प्रेरित करती है। भजन संहिता 145:3-6.

ईश्वर के सिद्धांत में तीन मुख्य विभाजन हैं। हमने अब पहला विभाजन पूरा कर लिया है, जो ईश्वर, पवित्र त्रित्व है। हमने जानबूझकर उसे पहले स्थान पर रखा है, न कि ईश्वर के गुणों को, क्योंकि ईश्वर के गुण ईश्वर के व्यक्तित्व से संबंधित हैं, जो त्रिएक, त्रिएक ईश्वर है।

हमारे ईश्वर के गुण, परिचय। त्रिएकत्व के सिद्धांत का अन्वेषण करने के बाद, हम ईश्वर के गुणों की ओर बढ़ते हैं, जो कि, मिलार्ड एरिक्सन के *ईसाई धर्मशास्त्र को उद्धृत करते हुए*, व्यवस्थित धर्मशास्त्र पुस्तकों के विस्फोट से पहले, काफी समय तक एरिक्सन की पुस्तक ही पुस्तक थी। मिलार्ड एरिक्सन *ईसाई धर्मशास्त्र*, पृष्ठ 291।

यहाँ बताया गया है कि वह परमेश्वर के गुणों को कैसे परिभाषित करता है। उद्धरण, परमेश्वर के वे गुण जो उसके स्वरूप को निर्धारित करते हैं, उसकी प्रकृति की विशेषताएँ। उद्धरण समाप्त करें।

वे अंतर्निहित, शाश्वत, स्थायी, वस्तुनिष्ठ और अविभाज्य हैं। और वे व्यक्त करते हैं कि परमेश्वर कैसा है। शुरू करने से पहले, हम आपको सावधान करेंगे और स्पष्टीकरण देंगे।

पहला, क्योंकि परमेश्वर अनंत है, इसलिए हम उसके चरित्र की गहराई को कभी नहीं समझ पाएँगे। नई धरती पर पुनर्जीवित संतों के रूप में भी, हम उसके बारे में सीखना कभी बंद नहीं करेंगे। दूसरा, क्योंकि परमेश्वर शाश्वत है, इसलिए हमें उसके सभी गुणों को शाश्वत मानना चाहिए।

ईश्वर हमेशा से रहा है, है और हमेशा रहेगा। चूँकि उसके गुण शाश्वत हैं और इसलिए स्थायी हैं, इसलिए ईश्वर अनंत, प्रेममय, पवित्र, अच्छा और इसी तरह का रहा है, है और रहेगा। तीसरा, चूँकि ईश्वर एक है, इसलिए हमें उसके गुणों में अत्यधिक अंतर करने से सावधान रहना चाहिए।

हालाँकि बाइबल परमेश्वर का वर्णन विभिन्न विशेषणों और छवियों के साथ करती है, लेकिन यह यह भी बताती है, क्षमा करें, कि वह एक है। वह एकीकृत है, अलग-अलग भागों में विभाजित नहीं है। इसलिए, उसकी विशेषताएँ अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन वे अविभाज्य भी हैं।

नीचे, हमने परमेश्वर के 20 से ज्यादा गुण सूचीबद्ध किए हैं। लेकिन वह 120वाँ पवित्र, 120वाँ प्रेमपूर्ण, वफ़ादार, इत्यादि नहीं है। परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र, प्रेमपूर्ण, वफ़ादार, इत्यादि है।

चौथा, क्योंकि ईश्वर एक व्यक्ति है, इसलिए हमें किसी गुण पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने एक ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो सत्य रूप से उस गुण से पहचाना जाता है। दूसरे शब्दों में, हम प्रेम का अध्ययन नहीं कर रहे हैं, बल्कि ईश्वर का अध्ययन कर रहे हैं, जो प्रेममय है। हम मुख्य रूप से संप्रभुता का अध्ययन नहीं कर रहे हैं, बल्कि ईश्वर का अध्ययन कर रहे हैं, जो संप्रभु है।

और पवित्रशास्त्र के अनुसार, परमेश्वर जो प्रेम है, वह एक साथ सर्वोच्च भी है। उसका प्रेम सर्वोच्च प्रेम है, और सर्वोच्चता प्रेमपूर्ण सर्वोच्चता है। इसी तरह, परमेश्वर सर्वशक्तिमान और पवित्र है।

इसलिए, यदि सर्वशक्तिमान होने का अर्थ है कि वह वह सब कुछ कर सकता है जो शक्ति कर सकती है, तो उसकी पवित्रता हमें याद दिलाती है कि उसके सभी शक्तिशाली कार्य भी पवित्र हैं, इत्यादि। मैं आपको जॉन फ्रेम की पुस्तक, द डॉक्ट्रिन ऑफ गॉड, और जॉन फीनबर्ग की पुस्तक,

नो वन लाइक हिम, द डॉक्ट्रिन ऑफ गॉड, की भी सराहना करता हूँ, जो अधिक दार्शनिक रूप से सूचित उपचार के लिए है। फीनबर्ग ने शिकागो विश्वविद्यालय से पीएचडी की है, इसलिए उनकी सामग्री दार्शनिक रूप से सूचित है, और वह मुझे धर्मशास्त्रीय रूप से सोचने में मदद करती है।

पाँचवाँ, क्योंकि परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता है, इसलिए हम उसे सही मायने में जान सकते हैं। हम उसे सही मायने में और सच्चाई से जान सकते हैं। परमेश्वर कृपापूर्वक हमें बताता है कि वह कौन है, और हम उसे और उसके गुणों को सही मायने में जान सकते हैं, भले ही कभी पूरी तरह से न जान पाएँ।

चार्ल्स हॉज इसे पुराने तरीके से कहते थे, हम ईश्वर को समझते हैं, हम ईश्वर को नहीं समझते, जबकि समझना ईश्वर के व्यापक ज्ञान की बात करता है। हमारा ईश्वर वास्तव में एक है, व्यक्तिगत, प्रेमपूर्ण, दयालु, सत्यनिष्ठ, इत्यादि। बेशक, ये मानवीय वर्णन, मानवीय श्रेणियाँ और मानवीय छवियाँ हैं।

ईश्वर मनुष्यों से मानवीय रूपों के अलावा और किस तरह संवाद कर सकता है? ईश्वर हमारी संस्कृतियों, विचारों, शब्दों और छवियों का उपयोग सादृश्य के रूप में करता है ताकि वह स्वयं को और अपने बारे में सत्य को हम तक प्रकट कर सके। हम उनकी वैधता पर भरोसा कर सकते हैं ताकि हम सच्चाई से बता सकें कि वह कैसा है क्योंकि वह ईश्वर है, और उसने हमें अपनी छवि में बनाया है, और उसने शब्दों के माध्यम से हमसे संवाद करना चुना है। ध्यान दें कि उसने शब्दों के माध्यम से हमसे संवाद करना चुना है।

प्रस्तावना प्रकाशन की धारणा ईश्वर के व्यक्तिगत प्रकाशन से मेल नहीं खाती। छठा, क्योंकि ईश्वर एक है, इसलिए सभी गुण सभी प्रयासों की विशेषता हैं। क्योंकि ईश्वर एक है, इसलिए उसके गुणों को वर्गीकृत करने के सभी प्रयास शुरू से ही त्रुटिपूर्ण हैं।

हम इसे स्वीकार करते हैं। तो फिर हम इन विशेषताओं को असंप्रेषणीय, अद्वितीय और संप्रेषणीय, साझा के रूप में क्यों चर्चा करते हैं? कुछ कारणों से। बिना किसी संगठन के 20 या उससे अधिक गहन विशेषताओं की एक लंबी सूची हमारे लिए संश्लेषण करने के लिए बहुत बड़ी है।

इससे भी अधिक, हालाँकि परमेश्वर के गुणों को असंप्रेषणीय और संप्रेषणीय कहना सही नहीं है, और श्रेणियाँ ओवरलैप होती हैं, वर्गीकरण ही हमें याद दिलाता है कि हम परमेश्वर से कैसे संबंधित हैं। कई बार, बाइबल इस बात पर ज़ोर देती है कि हम परमेश्वर की तरह नहीं हैं। असंप्रेषणीय विशेषताएँ इस अंतर को उजागर करती हैं।

वह स्वयंभू सृष्टिकर्ता है। हम सभी प्राणी अस्तित्व के लिए पूरी तरह से उस पर निर्भर हैं। वह अनंत है।

हम सीमित हैं। वह सर्वव्यापी है। हम स्थानिक रूप से स्थित हैं। वह सर्वशक्तिमान है। हमारी शक्ति सीमित है। वह शाश्वत है। हम समय से बंधे हुए हैं। वह अपरिवर्तनीय है। हम हमेशा प्रक्रिया में रहते हैं।

अन्य समयों में, बाइबल इस बात पर ज़ोर देती है कि हमें अपने चरित्र में परमेश्वर को प्रतिबिंबित करना चाहिए, और संचारी गुण इस बात को उजागर करते हैं। हम परमेश्वर की छवि में बनाए गए हैं, मसीह द्वारा बचाए गए हैं, जो परमेश्वर की सच्ची छवि है, और उसकी छवि के अनुरूप हैं। इसका मतलब है कि परमेश्वर वास्तव में हमें ऐसे लोगों में बदल रहा है जो उसे प्रतिबिंबित करते हैं।

लेकिन कैसे? हम निश्चित रूप से उसके असंक्राम्य गुणों को प्रतिबिंबित नहीं कर सकते, क्योंकि हम कभी भी स्वयं-अस्तित्व या अनंत नहीं होंगे। हालाँकि, उसकी कृपा से और मसीह के साथ एकता के माध्यम से, हम उसके संचारी गुणों को उस सीमा तक प्रतिबिंबित कर सकते हैं और करते हैं, जिस सीमा तक छुड़ाए गए प्राणी ऐसा कर सकते हैं। परमेश्वर पूरी तरह से संप्रभु है, और हमें परमेश्वर के प्रबंधकों के रूप में उसकी सृष्टि पर प्रभुत्व दिया गया है।

ईश्वर असीम रूप से बुद्धिमान है, और हम बुद्धिमानी में बढ़ते हैं। ईश्वर सत्यनिष्ठ है, और हम और अधिक सत्यनिष्ठ होते जा रहे हैं। ईश्वर विश्वासयोग्य है, और हमें भी ऐसा ही होना चाहिए।

परमेश्वर प्रेमपूर्ण है, और हम भी प्रेम करते हैं। और इसी तरह। परमेश्वर के गुणों को इस तरह वर्गीकृत करना इस महत्वपूर्ण सत्य को रेखांकित करता है।

ईसाई जीवन के गुण, आत्मा के फल, आनंदमय वचन, इत्यादि, तथा चर्च के चिह्न अनिवार्य रूप से परमेश्वर के संचार योग्य गुण हैं। हमारे परमेश्वर के अद्वितीय गुण, असंप्रेषणीय गुण, ये परमेश्वर के उन गुणों या विशेषताओं को संदर्भित करते हैं जो परमेश्वर के लिए अद्वितीय हैं। वे असंप्रेषणीय हैं।

वह इन चीज़ों को अपने लोगों के साथ साझा नहीं करता। हमारा परमेश्वर जीवित है, जिसे पारंपरिक रूप से अस्तित्व कहा जाता है। जीवित होने से हमारा मतलब है कि परमेश्वर अपने अस्तित्व के लिए किसी चीज़ पर निर्भर नहीं है।

वैसे, हमारा ईश्वर जीवित है, यह कहने का एक ज़्यादा बाइबलीय तरीका है, न कि अस्तित्व। मैं इस शब्द का तिरस्कार नहीं करता। इसका मतलब है अकारण, और हम इससे निपट लेंगे।

जीवित रहने से हमारा मतलब है कि परमेश्वर अपने अस्तित्व के लिए किसी और चीज़ पर निर्भर नहीं है। इसे परमेश्वर की अस्तित्व भी कहा जाता है। परमेश्वर अपने अस्तित्व का स्रोत है, जैसा कि यीशु ने कहा जब उन्होंने कहा, पिता स्वयं में जीवन रखता है, यूहन्ना 5:26।

सभी जीवन का निर्माता और प्रभु सभी को जीवन देता है और उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। वह जो सभी को जीवन और साँस देता है, प्रेरितों के काम 17:24, 25, उसे जीवन दिए जाने की

ज़रूरत नहीं है। इस गुण से संबंधित परमेश्वर की छवियों में जीवित जल का फव्वारा शामिल है, यिर्मयाह 2:13।

ईश्वर को किसी ने नहीं बनाया, किसी ने उसे जीवन नहीं दिया, क्योंकि वह जीवित ईश्वर है जो हमेशा से अस्तित्व में है। यशायाह बेबीलोन की मूर्तियों को कायर और उन लोगों को बचाने में असमर्थ के रूप में चित्रित करता है जो उन पर भरोसा करते हैं, यशायाह 46:1 और 2। भविष्यवक्ता उस व्यक्ति के तर्क पर सवाल उठाता है जो अपने हाथों से लकड़ी से अपने ईश्वर को गढ़ता है। भविष्यवक्ता अपने काम का मज़ाक उड़ाता है।

वह आग जलाता है, यशायाह 44:15 से 17. वह आग जलाता है और रोटी पकाता है। वह उसे देवता भी बनाता है और उसकी पूजा करता है।

वह उससे एक मूर्ति बनाता है और उसे प्रणाम करता है। वह उसका आधा हिस्सा आग में जलाता है और उस आधे हिस्से पर मांस भूनता है। वह भुना हुआ मांस खाकर संतुष्ट हो जाता है।

वह खुद को चेतावनी देता है और कहता है, आह, मैं गर्म हूँ। मुझे आग दिखाई दे रही है। वह बची हुई आग से भगवान या उसकी मूर्ति बनाता है।

वह उसके आगे झुकता है, उसकी पूजा करता है, और उससे प्रार्थना करता है: "मुझे बचाओ, क्योंकि तुम मेरे परमेश्वर हो।"

मुझे बचाओ क्योंकि तुम मेरे परमेश्वर हो, यशायाह 44:15 से 17. बाइबल में हास्य है। यहाँ यह एक तरह का व्यंग्यात्मक हास्य है।

बेजान मूर्तियों के विपरीत, जीवित परमेश्वर, उद्धारण, सभी को जीवन देता है। 1 तीमुथियुस 6, 13. हालाँकि परमेश्वर को हमारी ज़रूरत नहीं है, वह व्यक्तिगत है और यहाँ तक कि वाचा के ज़रिए अपने लोगों के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता है और उनकी निष्ठा का दावा करता है।

यह हमारे लिए बहुत बड़ा सौभाग्य है कि हम उस जीवित परमेश्वर पर अपनी पूर्ण निर्भरता को महसूस करते हैं जिसने प्रतिज्ञा की है कि मैं उनका परमेश्वर होऊंगा और वे मेरे लोग होंगे। यिर्मयाह 31:33. हमारा परमेश्वर एक एकता है।

केवल एक जीवित और सच्चा परमेश्वर है और वह एकता है। वह भागों से बना नहीं है और उसे मानसिक रूप से अलग-अलग भागों में विभाजित नहीं किया जाना चाहिए। मैं बस उन तीन आयतों में से कुछ को फिर से पढ़ूँगा जिनका हमने इस्तेमाल किया था जब हमने त्रिएकत्व के सिद्धांत के तहत अपने पहले बिंदु के रूप में पुष्टि की थी कि परमेश्वर एक है।

पहला है व्यवस्थाविवरण 6, जो इज़राइल के प्रसिद्ध शेमा में समाहित हो गया। यह इस अंश का पहला शब्द है। शेमा यिसरेल, यह शुरू होता है।

हे इस्राएल, सुनो, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है। तुम अपनी सारी सम्पत्ति से उससे प्रेम करना और अपने बच्चों को ये सत्य सिखाना। यहोवा हमारा परमेश्वर एक है।

पहला पतरस, पहला तीमुथियुस, क्षमा करें, दो और लोगों के साथ मिलकर अपने नेताओं के लिए प्रार्थना करते हैं। हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की बात करते हैं। हमें पादरी-वचन में उद्धारकर्ता शब्द से सावधान रहने की आवश्यकता है।

प्रथम और द्वितीय तीमुथियुस और तीतुस कभी पिता को संदर्भित करते हैं, कभी पुत्र को। जब भी यह पुत्र को संदर्भित करता है, तो यह उसके नाम का उपयोग करता है। पादरी में सामान्य उद्धारकर्ता का अर्थ है परमेश्वर पिता।

इस पर भ्रम की स्थिति है, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि पॉल खुद इस पर काफी स्पष्ट हैं। और हमें हाथ पकड़कर ले जाते हैं। मैं यहाँ अपनी पैंट की सीट पर बैठकर बात कर रहा हूँ।

यह तीतुस है। तीतुस 1, वह कहता है, सुसमाचार, उपदेश, जो मुझे पद 3 में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा से सौंपा गया है। पद 4 में, जब वह कहता है, वह तीतुस को लिखता है, वह कहता है, परमेश्वर पिता और मसीह यीशु, हमारे उद्धारकर्ता की ओर से अनुग्रह और शांति। वही शब्द, लेकिन जब वह पुत्र को संदर्भित करता है, तो वह उसका नाम उपयोग करता है।

मसीह यीशु, यीशु मसीह, उन विविधताओं में से एक है। किसी भी मामले में, पहला तीमुथियुस 2 अच्छा है। हम अपने नेताओं के लिए प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता की दृष्टि में प्रसन्न हैं, जो चाहते हैं कि सभी लोग अनुबंध के संदर्भ में बचाए जाएं।

इसका अर्थ है कि अगुवे भी, यहाँ तक कि अधर्मी अगुवे भी जो विश्वास का विरोध करते हैं और सत्य को पहचानते हैं। क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्य के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु, जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के लिये दे दिया, जिसकी गवाही समय पर दी गई है। परमेश्वर एक ही है।

पहला तीमुथियुस 2:5. और एक मध्यस्थ, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक मध्यस्थ, मसीह यीशु. तो व्यवस्थाविवरण 6:4. पहला तीमुथियुस 2:5. अंत में, याकूब 2. एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी में, याकूब ने यहूदी होने का दावा करने वालों, शायद यहूदी ईसाई होने का दावा करने वालों की मनमानी की आलोचना की, जो कबूल करते हैं, वे शेमा के सामने कबूल करते रहते हैं, वे कहते हैं कि परमेश्वर एक है, और फिर भी वे परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते और उसके लिए वैसे नहीं जीते जैसा उन्हें करना चाहिए. आप मानते हैं कि परमेश्वर एक है, याकूब 2:19.

आप अच्छा करते हैं। यहां तक कि राक्षस भी विश्वास करते हैं और कांपते हैं और थरथराते हैं। मार्टिन लूथर ने कहा, कम से कम राक्षस तो कांपते हैं।

जेम्स, श्रोतागण, कम से कम उनमें से कुछ लोग तो काँपते हुए नहीं दिखे। ऐसा नहीं लगता था कि उन्होंने विश्वास को ऐसे वैध कर्मों के साथ जोड़ा था जो उनके विश्वास के पेशे की वास्तविकता को दर्शाते थे। हमारा परमेश्वर एक है।

एकेश्वरवाद दोनों नियमों में ईश्वर के सिद्धांत का आधार है। हमारा ईश्वर आत्मा है। ईश्वर एक व्यक्ति है जो एक पवित्र आध्यात्मिक प्राणी है और हमारे जैसा शरीर नहीं रखता है।

इस विशेषता को ईश्वर की आध्यात्मिकता कहा जाता है। यीशु ने एक सामरी महिला से कहा, "ईश्वर आत्मा है और जो लोग उसकी आराधना करते हैं उन्हें आत्मा और सच्चाई से आराधना करनी चाहिए।" यूहन्ना 4:24.

हालाँकि पुराने नियम में परमेश्वर ने अपना नाम इस्राएल में सिथ्योन पर्वत पर प्रकट किया था, न कि सामरिया में गिरिज्जीम पर्वत पर, परमेश्वर एक आत्मिक प्राणी है जिसकी नई नियम की उपासना किसी एक भौगोलिक स्थान से बंधी नहीं है। बल्कि, उसकी उपासना आत्मा में है, जो कि आत्मिक है, और सच्चाई में है, जो कि यीशु में स्वयं के प्रकटीकरण पर आधारित है। हम परमेश्वर द्वारा अपनी उपस्थिति को भौतिक रूप से प्रकट करने को कैसे समझते हैं? जलती हुई झाड़ी में मूसा के सामने, निर्गमन 3:2 से 6। मंदिर के दर्शन में यशायाह के सामने, यशायाह 6:1 और 4। पिन्तेकुस्त के दिन आग और हवा में, प्रेरितों के काम 2:1 से 3। हम परमेश्वर द्वारा स्वयं को भौतिक रूप से प्रकट करने को कैसे समझते हैं? जैसा कि ये उदाहरण प्रमाणित करते हैं, ये ऐसे अवसर हैं जब परमेश्वर, एक अदृश्य आत्मा, अपने लोगों को मजबूत करने के लिए स्वयं को भौतिक रूप से प्रकट करता है।

वे यह संकेत नहीं देते कि ईश्वर एक भौतिक प्राणी है, जब शास्त्र उसके बारे में इस तरह बात करते हैं जैसे कि उसका एक चेहरा है, संख्या 625, भजन 34:16, जैसे कि उसके पास आँखें और कान हैं, भजन 34:15, एक हाथ, निर्गमन 6:1 और इसी तरह। वे यह संकेत नहीं देते कि ईश्वर एक भौतिक प्राणी है, जब शास्त्र उसके बारे में इस तरह बात करते हैं जैसे कि उसका एक चेहरा, आँखें और कान, एक हाथ, और इसी तरह की अन्य चीजें हैं। हम इन्हें मानवरूपी कहते हैं, क्योंकि वे ईश्वर के बारे में इस तरह बात करते हैं जैसे कि वह एक इंसान हो।

और बाइबल में उनकी उपस्थिति परमेश्वर के खुद को नम्र करने को दर्शाती है ताकि वह खुद को हम तक ऐसे शब्दों में पहुंचा सके जिसे हम समझ सकें। क्योंकि परमेश्वर आत्मा है, वह अदृश्य है, 1 तीमुथियुस 1:17, और मूर्तिपूजा मूर्खता है, व्यवस्थाविवरण 4। 1 तीमुथियुस 1:17 एक स्तुतिगान है। स्तुतिगान, 1 तीमुथियुस 1:17, पॉल ने बस फट से कहा।

हम वहाँ पहुँच गए। युगों के राजा, अमर, अदृश्य, एकमात्र ईश्वर को, सदा-सदा के लिए सम्मान और महिमा मिले। आमीन। आमीन। ईश्वर न केवल युगों का राजा है, वह अमर है, वह मनुष्य नहीं है, वह अदृश्य है।

यह उसके आत्मा होने, उसके आत्मिक होने, आध्यात्मिक होने का परिणाम है। पुराने नियम में यह बात तब प्रतिबिंबित होती है जब मूसा परमेश्वर के लोगों को याद दिलाता है कि जब परमेश्वर ने उनसे बात की थी, तब उन्होंने कुछ भी नहीं देखा था, कोई छवि नहीं देखी थी। व्यवस्थाविवरण 4:15 में मूर्तिपूजा को निषिद्ध करने वाले एक अंश में मूसा लिखता है, इसलिए, अपने आप को

बहुत सावधानी से देखो, क्योंकि जिस दिन परमेश्वर ने होरेब में आग के बीच से तुमसे बात की थी, उस दिन तुमने कोई रूप नहीं देखा था।

सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर बना लो, चाहे वह नर हो, चाहे नारी, चाहे पृथ्वी पर रहनेवाले किसी पशु, चाहे आकाश में उड़नेवाले किसी पक्षी, चाहे भूमि पर रेंगनेवाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में रहनेवाली किसी मछली की कोई मूर्ति बना लो। सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि जब तुम सूर्य, चंद्रमा, और तारागण, अर्थात् उनके सारे गण को देखो, तो अपनी आंखें आकाश की ओर उठाओ, और उन से खिंचकर उनको दण्डवत् करो, और उनकी उपासना करो, जिन्हें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने सारी पृथ्वी के नीचे रहनेवाले सब लोगों को दिया है। उनकी उपासना न करो।

ईश्वर एक आत्मा है। उसे अपनी सृष्टि के किसी भी भाग से इस अर्थ में नहीं पहचाना जाना चाहिए कि उसकी पूजा की जाए। वह अकेला ईश्वर है, और वह एक है, और वह एक आत्मा है।

इसके अलावा, केवल ईश्वर ही अनंत है। अनंत से हमारा मतलब है कि ईश्वर अपने व्यक्तित्व और पूर्णता में असीमित है। ईश्वर की छवियाँ जो उसकी अनंतता से संबंधित हैं, उनमें उच्च और महान व्यक्ति, यशायाह 57, 15 शामिल हैं।

शास्त्र सिखाते हैं कि ईश्वर असीमित है, विशेष रूप से उसकी शक्ति और समझ का उल्लेख करते हुए। मुझे यकीन नहीं है कि हम वास्तव में अनंतता दिखा सकते हैं या नहीं, लेकिन हम ईश्वर की परम महानता, मानवीय सीमाओं से परे उसकी परम श्रेष्ठता के बारे में बताते हुए अतिशयोक्तिपूर्ण अभिव्यक्तियाँ दिखा सकते हैं। तकनीकी रूप से, दार्शनिक रूप से अनंत? मुझे ऐसा नहीं लगता।

लेकिन क्या परमेश्वर अनंत है? हाँ, और इब्रानियों ने इसे इस तरह व्यक्त किया है। भजन 147: 5. भजन 147: 5. हमारा प्रभु महान है, उसकी शक्ति असीम है। उसकी समझ असीम है।

यशायाह 40 और आयत 28. प्रभु सनातन परमेश्वर है, पूरी पृथ्वी का निर्माता है। वह कभी भी थका हुआ या कमज़ोर नहीं होता।

उसकी समझ की कोई सीमा नहीं है। यशायाह 40:28. पौलुस कहता है, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे हृदय की आँखें ज्योतिर्मय हो जाएँ ताकि तुम जान सको कि परमेश्वर की सामर्थ्य की असीम महानता हमारे प्रति कैसी है जो उसकी सामर्थ्य के शक्तिशाली कार्यों के अनुसार विश्वास करते हैं।

इफिसियों 1:18 और 19. परमेश्वर की अनंतता उसका एकमात्र गुण नहीं है, बल्कि यह उसके बाकी गुणों के साथ सामंजस्य में है। इसलिए जब हम कहते हैं कि परमेश्वर अनंत है, तो हमारा मतलब यह नहीं है कि वह पाप कर सकता है, शक्तिहीन हो सकता है, या विश्वासघाती हो सकता है।

क्योंकि वह पवित्र, सर्वशक्तिमान और विश्वासयोग्य है। इसका मतलब है कि हमें ईश्वर के सभी गुणों को एक साथ रखने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि वह ऐसा ही है। हरमन बाविक, 1854 से 1921 तक, एक डच धर्मशास्त्री और सुधारवादी परंपरा में एक अग्रणी विचारक थे।

उन्होंने अपने साथियों के सामान्य तर्क को चुनौती दी, न केवल साथियों बल्कि बड़ों के भी। हर कोई डच में था, हम कहेंगे, इंजीलवादी। डच रूढ़िवादी चर्च रूढ़िवादी स्कूलों में जाता था। उन्होंने कहा, नहीं, मैं बड़े मेनलाइन स्कूल, बड़े उदारवादी स्कूल में जाना चाहता हूँ, और हॉलैंड, एम्स्टर्डम में हमारे समय के सबसे प्रसिद्ध शिक्षकों से सीखना चाहता हूँ।

सावधान रहें, यह नासमझी है, इत्यादि। अपने बड़ों के प्रति बहुत सम्मान रखते हुए, उन्होंने अपना रास्ता चुना और विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और बहुत व्यापक शिक्षा प्राप्त की। उन्हें डर था कि वह अपनी बाइबिल संबंधी जड़ें खो देंगे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

और फिर जब उन्होंने इंजील और सुधारवादी आस्था का बचाव करते हुए लिखा, तो उन्होंने उदार धर्मशास्त्र की व्यापकता और समझ के साथ ऐसा किया जो अविश्वसनीय था। वह सबसे प्रसिद्ध हैं, उन्होंने कई चीजें लिखीं, जिसमें एक नैतिक पाठ्यपुस्तक भी शामिल है। वह अपने सुधारवादी सिद्धांत के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं, जो एक आधिकारिक चार-खंड व्यवस्थित धर्मशास्त्र है।

मुझे याद है कि मेरे पास एक प्रोफेसर थे, रॉबर्ट वैनाय, जिन्होंने हॉलैंड में एम्स्टर्डम के फ्री यूनिवर्सिटी में अध्ययन किया था, और हमारे पास चार्ल्स होजेस सिस्टमैटिक थियोलॉजी और बिरखाफ सिस्टमैटिक थियोलॉजी थी। बर्कहॉफ एक डच-अमेरिकी थे, और वैनाय कहते थे, वे अच्छे हैं, और मुझे उनके लिए खुशी है, लेकिन बाविक बेहतर हैं। बाविक उल्लेखनीय हैं।

वह उदारवाद के साथ उच्च स्तर पर बातचीत करता है, वह पूरी तरह से रूढ़िवादी है, वह बहुत, बहुत प्रतिभाशाली है, और शुक्र है कि अब उन पुस्तकों का अनुवाद किया गया है। हमारे पास एक खंड वाली बाविक है, और हमारे पास चार खंड हैं। वे पढ़ने में आसान नहीं हैं, लेकिन वे ईश्वरीय पठन हैं, वे बाइबिल पठन हैं, वे पुराने हैं, लेकिन वे बहुत अच्छे हैं।

यहाँ बाविक ने, जिस उद्घरण को मैं पढ़ने जा रहा हूँ, उसमें दिखाया है कि ईश्वर अपनी सृष्टि से बहुत ऊपर, पारलौकिक और निकट, आसन्न दोनों है। उद्घरण, वही ईश्वर जो अपने रहस्योद्घाटन में, खुद को, मानो, कुछ विशिष्ट स्थानों, समयों और व्यक्तियों तक सीमित रखता है, उसी समय प्रकृति के पूरे क्षेत्र और हर प्राणी से असीम रूप से ऊपर है। यहाँ तक कि शास्त्र के उन हिस्सों में भी जो इस लौकिक और स्थानीय अभिव्यक्ति पर जोर देते हैं, उनकी उदात्तता, श्रेष्ठता और सर्वशक्तिमानता की भावना की कमी नहीं है।

बगीचे में चलने वाला प्रभु स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माता है। याकूब को दिखाई देने वाला परमेश्वर भविष्य को नियंत्रित करता है। हालाँकि इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों के बीच में रहता है, उस घर में जिसे सुलैमान ने उसके लिए बनाया था, वह स्वर्ग में भी समाहित नहीं हो सकता।

1 राजा 8:27. एक शब्द में कहें तो, पुराने नियम में ये दोनों तत्व एक साथ पाए जाते हैं। परमेश्वर उन लोगों के साथ है जो ठोस और विनम्र आत्मा वाले हैं, और फिर भी, वह महान और महान है जो अनंत काल तक निवास करता है।

यशायाह 57:15. यह कितना अद्भुत, अद्भुत अंश है। मैं इसे पढ़े बिना नहीं रह सकता।

उन्होंने हमारे लिए इसे संक्षेप में प्रस्तुत किया, लेकिन वाह। यशायाह पुराने नियम के रोमनों जैसा है। यह हिमालय है।

मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं यह शुरू करूँ। व्यवस्थाविवरण बाइबल में जितनी आध्यात्मिक पुस्तक है, उतनी ही आध्यात्मिक भी है। मैं अभी भजन संहिता का अध्ययन और अध्यापन कर रहा हूँ।

वाह। अगर आप देखना चाहते हैं कि आप कितने आध्यात्मिक बौने हैं। वैसे भी, परमेश्वर का सारा वचन प्रेरित और लाभदायक है।

यशायाह 57 पद 15. क्योंकि जो महान और महान है, जो सदा वास करता है, जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है। मैं ऊँचे और पवित्र स्थान में रहता हूँ, और उसके साथ भी रहता हूँ जो खेदित और नम्र आत्मा वाला है, ताकि नम्र लोगों के मन को हर्षित करूँ और खेदित लोगों के हृदय को हर्षित करूँ।

बाविक एक महान व्यक्ति थे, और प्रभु ने उनका बहुत उपयोग किया। और अब अंग्रेजी पाठक लाभ उठा सकते हैं। मुझे लगता है कि शायद पिछले 10 वर्षों में उन खंडों का अनुवाद किया गया था।

हालाँकि मेरी उम्र शायद 20 के आस-पास है, लेकिन ऐसा ही होता है। ईश्वर की अनंतता अन्य विशेषताओं को भी दर्शाती है।

वह असीम रूप से पवित्र, असीम रूप से शक्तिशाली है, इत्यादि। इफिसियों 2-4 में परमेश्वर के कई चित्रण हैं। बाविक की रचनाओं के कुछ अनुवाद चल रहे थे।

तो वास्तव में, यह 20 के करीब है। इफिसियों में परमेश्वर के कई चित्रण परमेश्वर की पूर्णता की अनंतता या महानता से संबंधित हैं। पौलुस उसके अनुग्रह के धन की बात करता है, 1:7, हमारे लिए उसकी शक्ति की अथाह महानता, उसकी ताकत का शक्तिशाली कार्य, इफिसियों का 1:19, और कहता है कि वह हर दूसरे अधिकार से बहुत ऊपर है, 1:21।

परमेश्वर दया में समृद्ध है, महान प्रेम से युक्त है, 2:4, और वह अपने अनुग्रह के अथाह धन को हम पर प्रकट करेगा, 2:7। पौलुस मसीह के अथाह धन की घोषणा करता है, 3:8। चर्च परमेश्वर की बहुमुखी बुद्धि को प्रदर्शित करता है, उद्धरण, श्लोक 10।

हमारी शक्ति उसकी महिमा के धन के अनुसार है, पद 16. पौलुस अति उत्साही है। वह परमेश्वर की महानता और अनंतता को व्यक्त करने के लिए शब्दों को पकड़ता है।

पॉल की प्रार्थना है कि हम समझेंगे कि परमेश्वर के प्रेम की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई और गहराई क्या है, एक ऐसा प्रेम जो ज्ञान से परे है, 18 और 19। खैर, फिर हम इसे कैसे समझ सकते हैं? हम इसे आंशिक रूप से समझते हैं, बेशक। वास्तव में, यह अनंत और महिमामय परमेश्वर हमारी माँगों या विचारों से कहीं बढ़कर और उससे भी बढ़कर करने में सक्षम है, 3:20।

हम अगली बार ईश्वर के अविभाज्य गुणों के साथ जारी रखेंगे, जो कि समान रूप से अद्भुत गुणों के लिए आधारशिला रखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र या ईश्वर पर उनके शिक्षण में दिया गया है। यह सत्र 10 है, त्रिदेवों का समापन, ईश्वर के गुण, परिचय, और अविभाज्य गुण।